



कविकुलगुरुकालिदाससंस्कृतविश्वविद्यालयः

महाराष्ट्रराज्यसर्वकारद्वारा संस्थापितम् UGC द्वारा प्रमाणितम् u/s 2f and 12B NAAC द्वारा B++ श्रेण्या प्रत्यायितं च

प्रशासनभवनम्, मौदामार्गः, रामटेकम् - 441106, जिल्ला- नागपुरम्

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्को यत्र साक्षिणौ ।

आचार्य (M.A.) जोतिषम्
विकल्पाश्रितपद्धतिः (CBCS निदर्शनम्)

पाठ्यक्रमः (Syllabus)

शैक्षणिकमण्डल्या अङ्गीकृतम् । संख्या. 2/2018, Dt. 25-04-2018 Item no.81 .

(2018-2019 तः)

| | |
|----------------|--------------------------------------------------------------------|
| पाठ्यक्रमनाम | आचार्यः (M.A.) जोतिषम् |
| विषयविभागः | प्राचीन भारतीयविज्ञानवि विभाग तथा मानवीयसम्बन्धाः |
| विभागस्य नाम | वेदाङ्गज्योतिषम् |
| परीक्षाप्रकारः | सत्रार्द्धम् (Semester) |
| पाठ्यक्रमकालः | वर्षद्वयम् (सत्रार्द्धचतुष्टयम्) |
| आहत्य अङ्काः | 80 |
| अर्हता | विशेषज्योतिषज्ञानम् कस्मिन्नपि विषये स्नातकत्वम् /PG Dip. ज्योतिषे |

| वर्षम् | आन्तरिकम् | | लेखनम् | | इतरत् | | पूर्णाङ्कः | | श्रेयः (Credits) | टीकाः |
|-------------------------------------|-----------|-----|--------|-----|-------|---|------------|-----|------------------|-------|
| प्रथमवर्षम् (सत्रम्. I & II) | 200 | 70 | 800 | 280 | - | - | 1000 | 350 | 40 | - |
| द्वितीयवर्षम् (सत्रम्. III & IV) | 200 | 70 | 800 | 280 | - | - | 1000 | 350 | 40 | - |
| आहत्य पूर्णाङ्काः | 400 | 140 | 1600 | 560 | - | - | 2000 | 700 | 80 | - |

| पाठ्यक्रमक्रमा इकः | पाठ्यविषयः | आन्तरिकम् अ | | लेखनम् आ | | इतरत् इ | | संपूर्णविषयः (कदाचित् समागम अतीर्णाय) अ+आ+इ | | श्रेयो संख्या (श्रेयोविधानम् अवसरः) |
|--------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-------------------------------------------------------|------------|-------------------------------------------|
| | | अन्त्या इकः | उत्तीर्णतारेखा | अन्त्या इकः | उत्तीर्णतारेखा | अन्त्या इकः | उत्तीर्णतारेखा | अन्त्या इकः | अन्त्याइकः | |
| प्रथमवर्षम् – प्रथमः सत्रार्द्धः | | | | | | | | | | |
| ACJ1-I-01 | सारावली | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-I-02 | जैमिनीसूत्राणि | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-I-03 | बृहत्संहिता-I | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-I-04 | सूर्यसिद्धान्तः | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-I-05 | लघुजातकम् (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्) | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| प्रथमवर्षम् - द्वितीयः सत्रार्द्धः | | | | | | | | | | |
| ACJ1-II-01 | फलदीपिका | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-II-02 | नरपतिजयाचार्य स्वरोदयः | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-II-03 | बृहत्संहिता-II | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-II-04 | ग्रहलाधवम् | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ1-II-05 | मानसागरि (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्) | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| प्रथमवर्षस्याहृत्य पूर्णाइकः | | 200 | 70 | 800 | 280 | | | 1000 | 350 | 40 |
| द्वितीयवर्षम् – तृतीयसत्रार्द्धम् | | | | | | | | | | |
| ACJ2-III-01 | जातकपारिजातम्-I | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-III-02 | प्रश्नमार्गः | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-III-03 | ताजिकनीलकण्ठी | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-III-04 | सिद्धान्तशिरोमणिः | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-III-05 | भारतीय कुण्डलि विज्ञान् (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्) | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| द्वितीयवर्षम् - चतुर्थः सत्रार्द्धः | | | | | | | | | | |
| ACJ2-IV-01 | जातकपारिजातम्-II | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-IV-02 | भावकुतूहलम् | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-IV-03 | प्रतिभावोधकम् & भ्रमरखानिरूपणम् | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-IV-04 | शङ्करबालकृष्णदीक्षितस्य ज्योतिषशास्त्रेतिहासः | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| ACJ2-IV-05 | ज्ञानतरङ्गिणी (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्) | 20 | 07 | 80 | 28 | - | - | 100 | 35 | 04 |
| द्वितीयवर्षस्याहृत्याइकाः | | 200 | 70 | 800 | 280 | - | - | 1000 | 350 | 40 |
| आहत्य पूर्णाइकाः | | 400 | 140 | 1600 | 560 | - | - | 2000 | 700 | 80 |

| वर्षम् | आन्तरिकम् | | लेखनम् | | इतरत् | | पूर्णाइकः | | श्रेयः (Credits) | टीकाः |
|------------------------------------|----------------|------------|----------------|------------|----------------|------------|----------------|------------|------------------|-------|
| | अन्त्या इकः | उत्तीर्णता | अन्त्या इकः | उत्तीर्णता | अन्त्या इकः | उत्तीर्णता | अन्त्या इकः | उत्तीर्णता | | |
| प्रथमवर्षम् (सत्रम् I & II) | 200 | 70 | 800 | 280 | - | - | 1000 | 350 | 40 | - |
| द्वितीयवर्षम् (सत्रम् III & IV) | 200 | 70 | 800 | 280 | - | - | 1000 | 350 | 40 | - |
| आहत्य पूर्णाइकाः | 400 | 140 | 1600 | 560 | - | - | 2000 | 700 | 80 | - |

प्राचीन भारतीयविज्ञानवि विभाग तथा मानवीयसम्बन्धाः

वेदाङ्गज्योतिषविभागः

आचार्यः (M.A.) ज्योतिषमम्

स्थानानि :- 20

माध्यमः :- संस्कृतम्

अवधिः :- वर्षद्वयम् (चत्वारि सत्राणि)

आहत्य अङ्काः – 2000 (प्रथमं वर्षम् - सत्रार्द्धम् I =500 & सत्रार्द्धम् II =500, द्वितीयं वर्षम् - सत्रार्द्धम् III =500 & सत्रार्द्धम् IV =500)

परीक्षापद्धतिः :- सत्रार्द्धस्य

प्रश्नपत्रक्रमः :- 80:20

लेखनाङ्काः – 80

आन्तरिकमूल्याङ्काः – 20

आयुर्मितिः :- 25 तः अधिकं न स्यात् ।

अर्हताः

(a) ससंस्कृतव्याकरणं वर्षत्रयात्मके स्नातकपाठ्यक्रमे/शास्त्रीकक्ष्यायाम्

उत्तीर्णता/B.A.वेदाङ्गज्योतिषम्/ वेदाङ्गज्योतिषे PG Diploma क.का.स.वि,

रामटेकः

(b) राज्यस्तरस्य राष्ट्रस्तरस्य वा केनचित् संस्कृतविश्वविद्यालयेन सज्योतिषं शास्त्रीसमत्वेन

(B.A.) प्रत्यायितायां कस्याञ्चित् परीक्षायामुत्तीर्णत्वम् ।

विकल्पाश्रितपद्धतिः (Choice Based Credit System) अस्यां पद्धतौ प्रतिशास्त्रं प्रतिसत्रार्द्धं, पञ्च पत्राणि भविष्यन्ति, यत्र 4 पत्राणि मुख्यशास्त्रविषये तथा च 1 पत्रम् आनुषङ्गिकशास्त्रविषये भविष्यति । आनुषङ्गिकशास्त्रम् शास्त्रान्तरेभ्यः चेतुं शक्यम् ।

A. मुख्यशास्त्रम् :- [ज्योतिषम्](#)

B. आनुषङ्गिकशास्त्रम् :- [ज्योतिषम्](#)

आन्तरिकमूल्यनिर्धारणम् –

प्रदत्तसत्रे एकस्थित् समये आयोजितपरिक्षा, विभागस्य सत्रारम्भनिर्देशानुगुणं मूल्याङ्कनम् (यथा परिवर्धनस्य क्षेत्रस्य अनुभवस्य च कार्यम्, लघुप्रश्नमञ्जूषा, अन्ववेक्षणात्मकं परीक्षणम्, प्रयोगशालाकार्यम्, प्रत्यक्षपुस्तकपरीक्षा इत्यादि । लेखनपरीक्षा, घटनाध्ययनम्, स्वाध्यायकार्यम्, स्फोरकपत्रनिर्माणम्, तथा प्रदर्शनमित्यादयः भवति कक्षायां यथाशक्यं कृतेन प्रदर्शनेन, सोत्साहं सर्वेषु कार्येषु भागग्रहणेन च मूल्याङ्कनं क्रियते । विद्यार्थिनः आहत्य उत्तरदायित्ववती अध्ययनशीलता, गतिविधयः, शैक्षणिकविषयेषु नेतृत्वगुणाश्च परिशील्यन्ते ।)

पाठ्यक्रमः
आचार्य (M.A.) ज्योतिषप्रथमसत्रार्द्धः

मुख्यशास्त्रम्

प्रणाली -I सारावली- (प्रवज्यायोगाध्यायपर्यन्तम्) 04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः 80
आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -II जैमिनीसूत्राणि (प्रथमद्वितीयोध्यौ) 04 श्रेयः
सम्पूर्णाङ्काः 100

प्रायोगिकाङ्काः 80

आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
तृतीयप्रश्नः – दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -III बृहत्संहिता (शस्त्रोपनयाध्यायादारभ्य अगस्त्य चराध्यायपर्यन्तं)
04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः 80
आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
तृतीयप्रश्नः – दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -IV सूर्यसिद्धान्तः (त्रिप्रश्नाधिकारात् पाताधिकारपर्यन्तम्)
04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः
80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | |
|---------------------------------------------|-----------|
| प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | 04X04= 16 |

CBCS

| | |
|------------|-----------------------------------------------------|
| प्रणाली -V | - ज्यौतिषम् (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्) |
| | लघुजातकम् (सम्पूर्णम्) |
| | 04 श्रेयः |
| | सम्पूर्णाङ्काः:100 |
| | प्रायोगिकाङ्काः |
| | 80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम् |
| | 20 |

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | |
|-------------------------------------|-----------|
| प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |

| | |
|---------------------------------------------|-----------|
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| तृतीयप्रश्नः – दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | 04X04= 16 |

आचार्य (M.A.) ज्योतिषद्वितीयसत्रार्द्धः

| | |
|------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| प्रणाली –I | फलदीपिका (ग्रहबलभेदः, कर्मजीवः, लग्नफलभेदः, सप्तमभावः, सन्तानचिन्तनम् , भावशुभाशुभचिन्तनम् , दशाभेदः, गोचाराध्यायः) |
| | 04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः:100 प्रायोगिकाङ्काः:80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20 |

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | |
|-------------------------------------|-----------|
| प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |

| | |
|---------------------------------------------|-----------|
| तृतीयप्रश्न: – दीर्घसमाधानप्रश्न: | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्न: | |
| चतुर्थप्रश्न: - दीर्घसमाधानप्रश्न: | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्न: | |
| पञ्चमप्रश्न: लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | 04X04= 16 |

प्रणाली -II नरपतिजयाचार्यकृत स्वरोदयः (चक्राध्यायपर्यन्तम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः:100
 प्रायोगिकाङ्काः
 80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्
 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | |
|---------------------------------------------|-----------|
| प्रथमप्रश्न: - दीर्घसमाधानप्रश्न: | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्न: | |
| द्वितीयप्रश्न: - दीर्घसमाधानप्रश्न: | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्न: | |
| तृतीयप्रश्न: – दीर्घसमाधानप्रश्न: | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्न: | |
| चतुर्थप्रश्न: - दीर्घसमाधानप्रश्न: | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्न: | |
| पञ्चमप्रश्न: लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | 04X04= 16 |

प्रणाली –III बृहत्संहिता (मेघगर्भलक्षणम् , गर्भाधारणम् , भूकमम्पलणम् ,
 वास्तुविद्याधायः, दकर्गलः)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः
80
आन्तरिकमूल्याङ्कन
म् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -IV ग्रहलाघवम् (ग्रहणाध्यायपर्यन्तम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः
80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्
20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

| | | |
|---------------------------------------------|--|-----------|
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | | 01X16= 16 |
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | | 01X16= 16 |
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | | 04X04= 16 |

CBCS

| | | |
|------------|---------------------------------------------------|--------------------------|
| प्रणाली -V | ज्यौतिषम् (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्) | |
| | मानसागरी (संपूर्णम्) | 04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः |
| | 100 | |
| | | प्रायोगिकाङ्काः 80 |
| | | आन्तरिकमूल्याङ्कनम् |
| | | 20 |

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | | |
|---------------------------------------------|--|-----------|
| प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | | 01X16= 16 |
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | | 01X16= 16 |
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | | 01X16= 16 |
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | | 01X16= 16 |
| अथवा | | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | | |
| पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | | 04X04= 16 |

आचार्य (M.A.) ज्योतिषतृतीयसत्रार्द्धः

प्रणाली -I जातकपारिजातम् (मान्दि अब्दाध्यायपर्यन्तम्)

100

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः

प्रायोगिकाङ्काः

80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्

20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -II प्रश्नमार्गः (प्रथमाध्यात् दशमाध्यायपर्यन्तम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः
80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्
20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | |
|---------------------------------------------|-----------|
| प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) | 04X04= 16 |

प्रणाली -III ताजिकनीलण्ठिः (संज्ञातन्त्रम् ,वर्षतन्त्रम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः
80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्
20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

| | |
|-------------------------------------|-----------|
| प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |
| अथवा | |
| दीर्घसमाधानप्रश्नः | |
| तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः | 01X16= 16 |

अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली –IV सिद्धान्तशिरोमणिः (गणिताध्यायः)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः:100
प्रायोगिकाङ्काः
80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्
20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः
पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

CBCS

प्रणाली -V ज्यौतिषम् (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्)
भारतीय कुण्डली विज्ञान्

04 श्रेयः

सम्पूर्णाङ्काः:100

प्रायोगिकाङ्काः

80

आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16
अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

आचार्य (M.A.) ज्योतिषचतुर्थासत्रार्द्धः

प्रणाली -I जातकपारिजातम् (अष्टकवर्गात् दशाफलाध्यायपर्यन्तम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः 80
आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -II भावकुतूहलम् (सम्पूर्णम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100
प्रायोगिकाङ्काः 80
आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः

01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि)

04X04= 16

प्रणाली -III प्रतीभाबोधकम् & भ्रमरेखानिरूपणम्

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100

प्रायोगिकाङ्काः 80

आन्तरिकमूल्याङ्कनम् 20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

प्रणाली -IV शङ्करबालकृष्णदीक्षितस्य ज्योतिषशास्त्रेतिहासः (सम्पूर्णम्)

04 श्रेयः सम्पूर्णाङ्काः 100

प्रायोगिकाङ्काः

80 आन्तरिकमूल्याङ्कनम्

20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा
दीर्घसमाधानप्रश्नः
पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16

CBCS

प्रणाली -V ज्यौतिषम् (इतरपाठ्यक्रमाधारितानां विद्यार्थिनाम्)

गणक तरङ्गीनि

04 श्रेयः

सम्पूर्णा

इका:100

प्रायोगिकाइका:

80

आन्तरिकमूल्याङ्कनम्20

प्रश्नपत्रप्रारूपम् -

प्रथमप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

द्वितीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

तृतीयप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

चतुर्थप्रश्नः - दीर्घसमाधानप्रश्नः 01X16= 16

अथवा

दीर्घसमाधानप्रश्नः

पञ्चमप्रश्नः लघुप्रश्नाः (अष्टानां चत्वारि) 04X04= 16
